IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 7, June 2026
Impact Factor: 8.2

हिंदी साहित्य और पर्यावरण चेतना

डॉ. एम. डी. राजहंस
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
श्रीमती मथुबाई गरवारे, कन्या महाविद्यालय, सांगली।
drmadhavirajhuns@gmail.com.

शोध सारांश : *साहित्य हमेशा समाज को पर्यावरण के प्रति जागरूक करता है और भविष्य की पीढ़ियों के लिए प्राकृतिक धरोहर को बचाने का प्रयास काता है तथा मनुष्य को भी उनका दायित्व समझाता है। हिंदी साहित्य के विभिन्न कालों में विभिन्न साहित्यिको द्वारा पर्यावरण को प्रमुख विषय बनाकर उसके द्वारा जन-जीवन को पर्यावरण का महत्त्व समझाते हुए अत्यंत सुंदर प्रकृति चित्रण किया गया है। आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक प्रकृति को केवल भौतिक संसाधन नहीं बल्कि पूजनीय माना गया है। वेद, उपनिषद और स्मृतियों में भी पर्यावरणीय चेतना के कई उदाहरण मिलते है। प्रकृति का चित्रण जिस रुप में भी हो वह ईश्वर की लीला का ही अंग है।*
प्रस्तुत शोध-पत्र हिंदी साहित्य में पर्यावरणीय चेतना स्पष्ट करते हुए, पर्यावरणीय चिंतन, प्रदूषण से बदलता हुआ पर्यावरण, पर्यावरण और मनुष्य का गहरा संबंध बताते हुए जनजीवन को पर्यावरण के प्रति सजग करता है। आज साहित्य का मुख्य उद्देश्य एवं दायित्व बन चुका है कि मनुष्य में शुद्ध पर्यावरण की चेतना निर्माण करना तथा पर्यावरण प्रदूषण रोकने का प्रयास करना।

बीज शब्द – प्रकृति, पर्यावरण, जनजीवन, प्रदूषण, सजगता, चेतना।

1. प्रस्तावना :

साहित्य समाज का दर्पण कहलाता है। हिंदी साहित्य के इतिहास में हर काल में पर्यावरण से संबंधित प्रकृति चित्रण पर विचार व्यक्त किया गया है। यदि धार्मिक दृष्टिकोन से देखा जाए तो सृष्टि का निर्माण ईश्वर ने किया है। और वैज्ञानिक दृष्टि से देखा जाए तो 13-14 अरब साल पहले एक महाविशाल विस्फोट हुआ, जिससे ब्रह्मांड की उत्पत्ति हुई। इस दृष्टि से इस सृष्टि पर रहने का अधिकार सभी जीव-जंतु, पशु-पक्षी, मनुष्य, प्राणी, पेड-पौधे सभी को है। किंतु आज मनुष्य ने अपने अधिकारों का दुरुपयोग करके प्रकृति पर हल्ला बोल दिया है। मनुष्य के पास बुद्धि है, निश्चित ही उसको इस सृष्टि पर गरिमा से जीने का हक है, किंतु प्रकृति के साथ सामंजस्य बिठाते हुए, उसके संसाधनों का सम्मान करते हुए।

2. विषय विवेचन :

प्राचीन काल से ही वेदो-उपनिषदों, पुराणों, स्मृतियों तथा सूत्र ग्रंथो में भी प्रकृति तथा पर्यावरण पर ध्यान दिया गया है। आधुनिक जीवनशैली और बढ़ता हुआ भौतिकवाद के कारण प्रकृति पर हमला होता दिखाई देता है। प्रकृति के शोषण और परिणामों की ओर भी साहित्य में हमेशा ध्यान दिया गया है। हिंदी के कई सारे साहित्यिक इसमें हमेशा अग्रेसर रहे हैं, जैसे मैथिलीशरण गुप्ता, केदारनाथ सिंह, निर्मल पुतुल, काशीनाथ सिंह, स्वयं प्रकाश आदि। आधुनिक हिंदी साहित्य में प्रकृति का चित्रण केवल सौंदर्यबोध तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह कवि को चेतना, सामाजिक यथार्थ और राष्ट्रीय भावनाओं से जुड़कर विकसित हुआ। छायावाद में प्रकृति सूक्ष्म, कल्पनाशील और स्वच्छंद रुप में सामने आई. छायावादी युग हिंदी कविता में प्रकृति चित्रण का स्वर्ण युग है, जहाँ प्रकृति केवल बाहरी सौंदर्य नहीं, बल्कि कवि के आंतरिक भावों की अभिव्यक्ति बनी।

‘‘चिर मीलित प्रकृति से पुलकित
वह चेतन पुरुष पुरातन
निज शक्ति तरंगाचित था
आनंद अबुनिधि शोमन।’ ’ 1

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in
DOI: 10.48175/IJARSCT-37508

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 7, June 2026 Impact Factor: 8.2

प्रसाद जी ने प्रकृति को ईश्वर की सर्वोत्तम भेट के रुप में माना है। प्रकृति मानव की सहचरी है, जो ईश्वरीय शक्ति के रुप में उभरी है। प्रगतिवाद में नागार्जुन दिनकर आदि कवियों ने प्रकृति को यथार्थ से जोड़ते हुए उसके शोषण और पर्यावरण संबंधी मुद्दों को उठाया जैसे 'मैला आंचल' में वृक्षों का मानवीकरण, 'यमुनी तीरे' में प्रदूषण की चिंता आदि।

हिंदी साहित्य में लिखी गई कविताएँ, कहानियाँ, नाटक और उपन्यास तथा नॉन, फिक्शन जैसी साहित्यिक विधाएँ लोगों को आपसी संबंधों, सामंजस्यों और विचारों के प्रति जागरुक करती है। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने कहा कि, ''साहित्य मानवता को सशक्त बनाता है और समाज को बेहतर बनाता है।' ' राष्ट्रपति ने नई दिल्ली में साहित्य आज तक में भाग लिया। इस अवसर पर राष्ट्रपति जी ने कहा कि, 'साहित्य मानवता के शाश्वत मूल्यों को बदलती परिस्थितियों के अनुसार ढ़ालता है। देश के क्षेत्रीय साहित्य में आखिल भारतीय चेतना हमेशा से मौजुद रही है। साथ ही मुर्मु ने इस बात का उल्लेख भी किया कि यह चेतना रामायण और महाभारत के समय से लेकर स्वतंत्रता संग्राम तक और आज भी भारत की यात्रा में दिखाई देती है।' ' 2

अत: मानवता की साहित्य को आवश्यकता तब तक बनी रहेगी जब तक मानवीय सभ्यता का अस्तित्व है। आज हम देखते है कि साहित्य के माध्यम बदले हैं, परंतु इसकी आवश्यकता कम नहीं हुई है। आदिकाल हो, मध्यकाल हो या आधुनिक काल हो सभी कालों में अलग-अलग कालखंड के अनुरुप रचनाए हुई है। किंतु इन सभी साहित्यकारों द्वारा रचित प्रकृति चित्रण रचनाओं ने पाठकों को हमेशा मोहित किया है। साहित्यकार समाज का महत्त्वपूर्ण अंग है, वह समाज में होनेवाले बदलाओं को करीब से देखता है। आज हम प्रदूषण से बदलता हुआ पर्यावरण नजदीक से देख रहे है, तो साहित्य भी इससे अछूता नहीं रह सकता।

3. हिंदी साहित्य में पर्यावरणीय संदेश :

प्राचीन काल से ही हिंदी साहित्य पर्यावरण के प्रति केवल चित्रण ही नहीं करता, बल्कि उसे एक सामाजिक विमर्श का माध्यम बनाकर जन आंदोलन की प्रेरणा देते हुए प्रकृति और मानव के सह-अस्तित्व को मान्य कर उसे बचाने का संदेश देता है। साहित्य में पेड़ो, नदियों, पहाड़ों को सजीव रुप देकर उनके दर्द और मनुष्य के साथ संबंधों को दिखाया जाता है। अत: प्रकृति का मानवीकरण किया जाता है। प्रकृति चित्रण को अधिकता, छायावादी, कवियों की रचनाओं में अधिकांशत: देखने को मिलती है। इस काल में प्रकृति का स्थान अनूठा था। आज के इस युग में जब मानव भोगवादी बन बैठा है एवं हर वक्त प्रकृति पर विजय पाने की कामना करता है। ऐसे में प्रसाद जी अपने रचनाओं के माध्यम से भोगवादी प्रणाली और प्रदूषण के विरूद्ध चेतावनी देते है। जैसे निम्नलिखित पंक्तियों में प्रभात, ऊषा, रजनी को एक चिंतन व्यक्तित्व दिया गया है।

'' अब जागो जीवन के प्रभात!
रजनी की लाज समेटी तो….
कलख से उठकर भेटो तो
अरुणांचल में चल रही बात।
जागो अब जीवन के प्रभात।' ' 3

छायावाद के अतिरिक्त प्रयोगवादी काल के प्रवर्तक अज्ञेय के काव्य में भी मानव और पर्यावरण के अंत संबंधों की झलक मिलती है। उन्होंने अपनी कविता 'असाध्य वीणा' में मनुष्य की अहं का त्याग करने तथा।

4. पर्यावरण प्रदूषण और हिंदी साहित्य की सजगता :

पर्यावरण में बहुत सारी बातों का समावेश होता है। यह सभी पर्यावरण के अंग कहलाते हैं। भारतीय दर्शन के अनुसार पंचतत्व सृष्टि के पांच मूलतत्व हैं। प्रकृति के इन पांच तत्वों से मिलकर ही मानव शरीर की रचना हुई है। भारतीय साहित्य और दर्शन संपूर्ण रूप से पर्यावरण केंद्रित रहे हैं। हमारे चारों ओर का वायुमंडल, जिसमें हम और जीवधारी रहते हैं, सब मिलकर पर्यावरण बनाते हैं। अध्ययन से पता चलता है कि तत्कालीन सभ्यता के व्यक्ति प्रकृति की पूजा करते थे। भी उनकी माता थी जिसकी रक्षा के लिए तथा जीस पर जीवन बनाए रखने के लिए वे अपने सभी कर्तव्यों का पालन करते थे। जैसे तुलसी, बरगद, पीपल आदि की पूजा करते थे जिससे उनके औषधीय गुणों को बचा सके तथा पर्यावरण को शुद्ध रख सके। हजारी प्रसाद द्विवेदी जी के कुटज में वर्णन करते हैं, ''यह धरती मेरी माता है और मैं इसका पुत्र हूँ। इसलिए मैं सदैव इसका सम्मान करता हूँ और मेरी धरती माता के प्रति नतमस्तक हूँ।' ' 4

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 7, June 2026 Impact Factor: 8.2

तात्पर्य यह यह है कि भारतीय संस्कृति में वन और वनस्पति का बहुत अधिक महत्त्व रहा है। पर्यावरण के सभी घटक जैसे वन, वन्यजीव, नदियां व वायु इन सभी घटकों के साथ तारतम्य बनाकर मनुष्य जीवन चलता था। परंतु समय एवं स्थान के संपर्क में हमेशा बदलता भी रहा है। प्रकृति पर पर्यावरण का बदलाव स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है। प्रकृति द्वारा उपलब्ध साधन जब मनुष्य के लिए कम पड़ने लगे तब मनुष्य ने प्रकृति पर हल्ला बोल दिया। आज हमारी जनसंख्या पांच छह अरबों की सीमा पार गई है, जिसने हम सबको चिंतित कर दिया है। शुद्ध जलवायु, खाद्यान्न, ऊर्जा जैसे साधनों के अभाव का सामना करना पड़ रहा है।

मनुष्यों ने जैसे ही जंगलों की कटाई बड़े पैमाने पर की वहाँ कारखाने, सड़कें आदि सुविधाएं बनाई गईं, किंतु मानव द्वारा निर्मित ये वस्तुएं प्राकृतिक संतुलन को बचा नहीं पाई। परिणामत : इन सब बातों से पर्यावरण असंतुलन हुआ। पर्यावरण के विभिन्न घटक प्रदुषित होते रहे जैसे, वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, भूमि प्रदूषण और पर्यावरण प्रदूषण आदि। तथा अति औद्योगिक संस्कृति जो केवल उपभोगवादी है, प्रकृति को असंतुलित कर रही है, जो आनेवाली पीढ़ियों के लिए जीवन मरण का सवाल बनकर उभर रही है, जिससे हम सबको सुरक्षित होना है। प्रकृति के साथ अपने बिगड़े संबंधों को सुधारना है।

भक्तिकाल को हिंदी साहित्य का स्वर्ण युग कहा जाता है। संत कबीर, सूरदास, तुलसीदास जैसे कवियों ने प्रकृति का मानव जीवन से गहरा संबंध दिखाया है। वनों, नदियों, पशुपक्षियों का वर्णन केवल सौंदर्य के लिए नहीं बल्कि पर्यावरण संतुलन और संरक्षण के लिए दर्शाया है। कबीर की पर्यावरणीय चेतना का सबसे मुख्य पक्ष प्राणी रक्षा है। मनुष्य जो प्रकृति पर हमला कर खुद को प्रकृति का स्वामी बना बैठा है उस संबंध में कहते हैं –

"बकरी धाती खाती है ताकि काढ़ने खातू।
जो नर बकरी खान है, जिनका कौन हवाल।"5

अर्थात कबीर कहते हैं कि यदि केवल पत्तियाँ खानेवाली बकरी के साथ मनुष्य इनकी क्रूरता है तो प्रकृति का न्याय उस क्रूर मनुष्य के साथ क्या करेगा? अपकृति के प्रतिशोध की एक चेतावनी ही थी जिसके कई उदाहरण हम पर्यावरण प्रदूषण से उत्पन्न समस्याओं में देख रहे हैं। मनुष्य और पर्यावरण के बिगड़े हुए संबंधों का सजीव उदाहरण है कोविड 19। कोरोना से ऐसी भयावह बिमारी से हम हाल ही में सभी गुजर चूके हैं, अतः हम सबको पर्यावरण के प्रति सजग रहना है।

वैदिक काल में वेदों, उपनिषदों में प्रकृति को पूजनीय माना है। भक्तिकाल में कबीर जैसे संतों के पशु-पक्षियों और पेड़- पौधों को जीवंत रूप अपने काव्य में दिया है। रीतिकाल के बिहारी, भूषण जैसे कवियों ने प्रकृति के सौंदर्य का अलंकारिका वर्णन किया है, जो प्रकृति प्रेम को दर्शाता है। आधुनिक काल जैसे छायावाद में पंत निराला, महादेवी वर्मा, जयशंकर प्रसाद जैसे कवियों के ने प्रकृतिक के रूपों, उसके सौंदर्य और प्रकृति का मानवीकरण, उसके भावनिक जुड़ाव का वर्णन किया है।

आज वर्तमान युग में भूमंडलीकरण और औद्योगिकरण के दौर में साहित्यकारों ने जंगलों की कटाई, जल प्रदूषण, प्लास्टिक कचरे, घटती हरियाली जैसे समस्याओं को उठाया है और चिंता, समाधान का पाठकों को आहवान ही किया है।

5. निष्कर्ष

हिंदी साहित्य में प्रकृति के सौंदर्य चित्रण के साथ ही पर्यावरण के विभिन्न घटक, पर्यावरण प्रदूषण, ग्लोबलाइजेशन तथा अन्य कई सारी महत्वपूर्ण समस्याओं का ध्यान दिया गया है। पर्यावरणवादी अनुपम मिश्रा की कृति आज भी खरे हैं। ताकत वर्तमान में पर्यावरणीय चेतना की सर्वश्रेष्ठ अभिव्यक्ति है। प्रेमचंद जैसे युग प्रवर्तक साहित्यकार के साहित्य में भी पर्यावरणीय चेतना, संवेदना के दर्शन होते हैं। प्रेमचंद जी ने 'दो बैलों की कथा' के माध्यम से प्रकृति के संवेदनात्मक पक्ष को उभारा है।

संदर्भ सूची

1. सुमित्रानंदन पंत ग्रंथावली खंड : सात (पृ. 52)
2. https//hi.quora.com/
3. छायावाद और रहस्यवाद : गंगा प्रसाद पाण्डेय (पृ. 30)
4. Junikhyatjournal.in/no.3, page. 40.
5. डा. हरिहर प्रसाद गुप्त, कबीर ग्रंथाली, जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण, 2005।